अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका

2.1 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का अर्थ

2.1.1 शोध से संबंधित पुराना साहित्य का पुनरावलोकन

2.1.2 शोध से संबंधित नवीन साहित्य का पुनरावलोकन

2.2 सारांश

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0. भूमिका :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन, एक प्रारंभिक प्रक्रिया है। क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंध उन सभी प्रकार की पुस्तको, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों से है, जिसके अध्ययन से अनुसंधान की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

संबंधित साहित्य के अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नही बढ़ाया जा सकता है। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य को किया गया है तथा उससे क्या निष्कर्ष आए है तब तक वह न वो उद्देश्य का निर्धारण कर सकता है और न इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.1 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ :–

1. गुड, बार और स्केट्स (1956) के अनुसार :–

"योग्य चिकित्सक को औषधि के क्षेत्र में हुए नवीनतम अन्वेषण के साथ चलना चाहिए .... स्पष्टतया शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी और शोधकर्ता को शैक्षिक सूचनाओं साधनों और उपयोगों तथा उनके स्थापन से परिचित होना चाहिए।"

`यह सिद्धांत विचार, व्याख्याएं अथवा परिकल्पनाएं प्रदान करता है जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते हैं। परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पनाएं बना सकता है। यह समस्या के समाधान के लिए उचित विधि प्रक्रिया तथ्यों के साधन और तकनीक का सुझाव देता है।

अतः उपर्यूक्त कारणों को देखने से यह ज्ञात होता है कि अनुसंधान में साहित्य के अवलोकन का अत्यधिक महत्व है। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन को दो भागों में बांटा गया है :–

2.1.1 शोध से संबंधित पुराना साहित्य का पुनरावलोकन (सन् 1974–1977)

2.1.2 शोध से संबंधित नवीन साहित्य का पुनरावलोकन (सन् 1987–2003)

2.1.1 शोध से संबंधित पुराना साहित्य का पुनरावलोकन :–

शोध से संबंधित पुराना साहित्य के पुनरावलोकन हेतु सन् 1974 से 1977 तक के वर्षों का साहित्य पुनरावलोकित किया गया है।

व्यक्तित्व पर सबसे पहला अध्ययन भारत में श्रीवास्तव (1953) द्वारा इलाहबाद विश्वविद्यालय में किया गया। यह स्त्रियों व पुरूषों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन था।

(1) अन्सारी (1974), लचीलापन तथा कठोरता व्यक्तित्व विशेषकों का अध्ययन।

इस शोध के द्वारा कठोर तथा मृदु स्वभाव के व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करना था। इस हेतु 480 विद्यार्थियों को लिया गया। इस शोध के द्वारा देखा गया कि कठोरता पर क्षेत्रीयता, लिंग, शिक्षा के प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता है।

(2) शर्मा (1975), नेतृत्व प्रभावशीलता में व्यक्तित्व विशेषकों का योगदान।

इस शोध के उद्देश्य थे व्यक्तित्व विशेषकों का नेतृत्व प्रभावशीलता में योगदान का अध्ययन तथा छात्र नेता के व्यक्तित्व विशेषकों का अध्ययन करना। जिसके लिए 150 नेताओं को लिया गया। शोध के परिणाम द्वारा ज्ञात हुआ कि पुरूष तथा महिला नेताओं में समान नेतृत्व गुण देखे गए।

(3) सिंह (1977), भागलपुर के उच्च व निम्न बुद्धि के लड़कों व लड़कियों के कुछ व्यक्तित्व विशेषकों का अध्ययन।

इस शोध के उद्देश्य से बुद्धि तथा व्यक्तित्व का सम्बंध ज्ञात करना तथा उच्च व निम्न बुद्धि सदस्यों का व्यक्तित्व विशेषकों का अंतर ज्ञात करना। यह शोध 460 लड़कों –लडकियों

पर किया गया। शोध के परिणाम में यह देखा गया कि बुद्धि, लिंग, सांस्कृतिक वातावरण खुली शिक्षा से प्रभावित होती है। लड़के लड़कियों से सुपर देखे गए।

(4) सेनगुप्ता (1977), पूर्व किशोरावस्था के बालकों के व्यक्तित्व विशेषक का अध्ययन।

इस शोध के उद्देश्य थे ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बालकों में तनाव, चिंता और निर्भरता का अध्ययन करना। यह परीक्षण 250 बालकों पर किया गया। यह देखा गया कि व्यक्तित्व पर तीनों कारकों, चिंता, तनाव तथा निर्भरता का धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

(5) तिवारी (1977), हाईस्कूल बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

इस शोध के उद्देश्य थे। ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का तुलना करना तथा व्यक्तित्व पर निवास क्षेत्र, लिंग का प्रभाव ज्ञात करना, यह शोध 200 लड़कियों तथा 300 लड़कों पर किया गया शोध में यह पाया गया कि शहरी क्षेत्र के लड़के व लड़कियां ग्रामीण क्षेत्र के लड़के लड़कियों से सूपीरियर थे तथा लड़के–लड़कियों की अपेक्षा अधिक समायोजन करते थे।

2.1.2 शोध से संबंधित नवीन साहित्य का पुनरावलोकन :–

शोध से नवीन साहित्य का पुनरावलोकन हेतु सन् 1987 से 2003 तक के वर्षों के साहित्य का पुनः अवलोकन किया गया।

(1) परवल (1987), अनुशासित बनाम अनुशासनहीन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व तथा उनकी मानसिक योग्यता का अध्ययन।

इस शोध के उद्देश्य थे अर्न्तमुखी तथा बर्हिमुखी विद्यार्थियों का अनुशासन तथा अनुशासनहीन के संदर्भ में अध्ययन करना। यह शोध 320 अनुशासित तथा 320 अनुशासनहीन विद्यार्थियों पर किया गया। शोध में यह पाया गया, कि अनुशासित विद्यार्थी अनुशासनहीन विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक अन्तर्मुखी पाए गए।

(2) सेमुअल, गुडचाइल्ड (1988), हास्कूल विद्यार्थियों का व्यक्तित्व, समाजीकरण और नैतिक विकास।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

इस शोध के उद्देश्य थे बच्चों के नैतिक समायोजन पर पालकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव ज्ञात करना तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा सामाजिक कौशल में अंतर ज्ञात करना। इस शोध हेतु 13 से 15 वर्ष के 540 विद्यार्थी लिए गए। शोध में पाया गया कि नैतिक विकास तथा व्यक्तित्व विशेषकों के मध्य सम्बंध है तथा नैतिक स्तर का सम्बंध विद्यालायी निष्पत्ति से है।

(3) सूद (1988), केटल का व्यक्तित्व कारक कुछ व्यावसायिक कोर्स में शैक्षिक निष्पत्ति का भविष्य कारक है।

इस शोध के उद्देश्य थे व्यावसायिक कोर्स में उच्च उपलब्धि तथा निम्न उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों का व्यक्तित्व प्रोफाइल तैयार करना। यह शोध 606 विद्यार्थियों पर किया गया। शोध में यह पाया गया कि सामाजिक जागरूकता और उच्च बुद्धिमान व्यक्तित्व पर धनात्मक प्रभाव डालती है।

(4) आचार्य (1991), मिलान चित्र परीक्षण के व्यक्तित्व सम्बंध एक अध्ययन

इस शोध के उद्देश्य थे EPPS माने गए रिफ्लेक्टिव तथा इम्पलसिव विषयों के व्यक्तित्व का परीक्षण करना। इस शोध में 22 वर्ष के 60 स्नातकोत्तर विद्यार्थी प्रतिदर्श के लिए गए। शोध में पाया गया कि रिफ्लेक्टिव समूह सुपीरियर परकामेन्स प्रदर्शित करता है।

(5) देवी और मयूरी (2003), आवासीय विद्यालयों के विधार्थियों के उपलब्धि में व्यक्तित्व कारकों का योगदान।

इस शोध के उद्देश्य थे कक्षा 9 व 10 के निजी आवासीय विद्यालयों के उपलब्धि को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत कारकों का योगदान का अध्ययन करना। इस शोध में 120 विद्यार्थियों को प्रादर्श के तौर पर किया गया। शोध के परिणामस्वरूप देखा गया कि विद्यार्थी सर्जनात्मकता, अनुकुलित और एवं नियन्त्रण, अध्ययन की आदतें बालकों में बालिकाओं की अपेक्षा अधिक देखा गया।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

सारांश :–

उपरोक्त वर्णित साहित्य के पुनरावलोकन के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि व्यक्ति के संपूर्ण जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं यही कारण है कि लडके–लडकियों, पूर्व किशोरावस्था, व्यावसायिक कोर्स के विद्यार्थियों आदि के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से संबंधित विविध शोध हुयें है। इसी महत्व को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत अध्ययन में **कक्षा छः के विद्यार्थियों के चयनित व्यक्तित्व विशेषकों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।**

——————— 0 ———————

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal